क्वीज प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित

स्वयं को जीतने वाला बड़ा विजेता : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 2 सितम्बर, 2010।

आचार्य महाश्रमण ने नित्य प्रवचन में कहा कि युद्ध में विजय प्राप्त प्राप्त करने वाला यौद्धा बड़ा विजेता माना जाता है परन्तु उससे भी बड़ा विजेता स्वयं को जितने वाला होता है। युद्ध क्षेत्र में रणनीति महत्वपूर्ण होती है तो स्वयं को जितनेके लिए साधना महत्वपूर्ण होती है। जब व्यक्ति में संकल्प का जागरण हो जाता है तो वह खुद को जीत सकता है।

उन्होंने कहा कि क्रोध को उपशम की साधना से लोभ को संतोष के द्वारा जीतने का प्रयास करें। कषाय को जितने पर आत्मा को जीत सकते हैं। उन्होंने विनम्रता सहनशीलता के विकास की प्रेरणा दी।

प्रवचन कार्यक्रम में गत दिनों तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित महात्मा महाप्रज्ञ क्वीज प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित किये गये। इस प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रस्तुति ज्योति दफ्तरी की रही, प्रतियोगिता के प्रायोजक रतनलाल दफ्तरी ने प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले चन्द्रप्रकाश सेठिया, सूरज बैद,ऋषभ छाजेड़ को चांदी से निर्मित अष्ठमंगल प्रतिक पुरस्कार प्रदान किये। द्वितीय स्थान पर रहने वाले ज्योति दफ्तरी, ज्योति गधैया, गुंजन को सभा अध्यक्ष अशोक नाहटा ने तृतीय स्थान पर रहने वाले कविता बुच्चा, मधु छलानी, नम्रता बैद को सभा के उपाध्यक्ष पीरदान बरमेचा ने और प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने वालों को सभा के मंत्री करणीदान चिण्डालिया ने प्रदान किये। संचालन श्रीमती निशा सेठिया ने किया।

पर्युषण आराधना महाशिवर 5 से

5 सितम्बर से आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पर्युषण आराधना महाशिविर का शुभारंभ होगा। उक्त जानकारी देते हुए प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने बताया कि 5 से 11 सितम्बर ते चलने वाले इस महाशिविर में ध्यान, अनुप्रेक्षा के प्रयोग, आसन, प्राणायाम, आगम वाचन, मंत्र जप, प्रवचन अर्हत वंदना, प्रतिक्रमण आदि समाहित होंगे। उन्होंने बताया कि जैनों का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है पर्युषण महापर्व। इस आठ दिनों में जैन श्रावक विशेष आत्मा की साधना करते हैं, इस साधना में मौन, सामायिक, सचित का परित्याग, रात्री भोजन का वर्जन आदि का अभ्यास करता है।

उन्होंने बताया कि 12 सितम्बर इस महाशिविर का सबसे बड़ा दिन होगा। उस दिन को संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया जायेगा। इस दिन प्रात: 7.30 बजे से शाम 4 बजे तक प्रवचन कार्यक्रम चलेगा और हजारों

लोगों द्वारा उपवास एवं पौषध किया जायेगा। 13 सितम्बर को प्रातः खमत खामणा (क्षमा याचना) का कार्यक्रम आयोजित होगा। इसमें साधु-साध्वियां एवं श्रावक समाज के द्वारा अपने पूज्य गुरुदेव से खमत खामणा किया जायेगा। आचार्य महाश्रमण भी सभी से खमतखामणा करेंगे। इस खमत खामणा के दृश्य को देखने के लिए अनेकों क्षेत्रों स लोग पहुंचते हैं। इस दिवस को सभी लोग आपस में भी खमत खामणा करते हैं और साल भर के वैर को दूर करते हैं।

पूर्व जन्म अनुभूति शिविर

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं मुनि किशनलाल के निर्देशन में चलने वाले पूर्व जन्म अनुभूति शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को मुनि किशनलाल ने पूर्वजन्म अनुभूति के प्रयोग करवाए।

मनुष्य मस्तिष्क विशाल भण्डार है। उसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य की कल्पनाओं का संकलन है। उस संकल्प को जागृत कर पूर्वजन्म अनुभूति को साकार किया जा सकता है।

जागृत मन का क्षेत्र बहुत छोटा दस प्रतिशत है है, अर्धजागृत मन का क्षेत्र नब्बे प्रतिशत विशाल है जबकि अजागृत मन का क्षेत्र असंख्य गुणा अधिक है जागृत मन से जो सोचते हैं, उसमें वह विधायक भाव और निषेधात्मक दोनों है, विधायक चेतना विकास करता है, जीवन में सफलता प्रदान करता है। निषेधात्मक भाव व्यक्ति को गर्त मे ंले जाता है।

प्रेक्षाध्यान से विधायक भावों द्वारा स्मृति पटल पर अंकित पूर्व जीवन की घटनाओं का साक्षात होता है उसके लिए उन्हें गहरे कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान और शरीर रचना के बारे में जानकारी दी जाती है। शिविर निर्देशक मुनि किशनलाल ने बताया कि पूर्व जन्म अनुभूति में प्रवेश के लिए लोगों को तैयार करना होता है। उनमें किसी प्रकार का भय नहीं रहे इसलिए उन्हें अभय की अनुप्रेक्षा करवाई जाती है, गहराई में उतरने के लिए प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया जाता है, शरीर रचना और जागृत मन आदि के संदर्भ में बाताया जाता है इस कार्य में मुनि किशनलाल के अलावा मुनि हिमांशुकुमार, मुनि निरजकुमार, बजरंग जैन और जयपुर से आए डॉ. शिवकुमार तेजस ने विविधि विषयों की जानकारी दी।